दैनिक सुबह सवेरे, भोपाल

09 MAY 2017

स्मृति शेष :

स्व. अनिल माधव दवे

शिवराज सिंह चौहान

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

भरोसा नहीं होता है कि अनिल दवे जी अब हमारे बीच नहीं हैं। वे अद्भुत व्यक्तित्व के धनी, नदी संरक्षक, पर्यावरणविद, मौलिक चिंतक, कुशल संगठक थे। अनिल जी मौलिक लेखक थे। वे कल्पनाशील मस्तिष्क के धनी थे। उन्होंने अनेक किताबें लिखीं। वे असाधारण रणनीतिकार थे। बचपन से ही अपना जीवन भारत माता के चरणों में समर्पित कर दिया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के नाते पूरा जीवन, देश और समाज की सेवा में अर्पित कर दिया।

अनिल जी को जो भी दायित्व मिला, उनको पूरा किया। संघ की योजना के अनुरूप वे भोपाल विभाग के प्रचारक थे और मैं उनका स्वयं सेवक रहा। वे सबका ध्यान रखते थे। मुझे याद है कि जब मेरा एक्सीडेंट हुआ था तब उन्होंने मेरा आपरेशन मुम्बई में डॉ. होलकिया के हाथों से ही करवाना सुनिश्चित किया था। वे अपने कार्यकर्ताओं का हमेशा ध्यान रखते थे। सदैव कार्य में रमे रहते थे। वर्ष 2003, 2008 व 2013 के विधान सभा व लोक सभा के चुनाव उनकी कुशल रणनीति के कारण हम जीते, मैं यह कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। विजय में उनका उल्लेखनीय योगदान था।

माँ नर्मदा के वे ऐसे भक्त थे कि उन्हें जब भी समय मिलता था, मैय्या के तट पर पहुंच जाते थे। वे पायलट थे। उन्होंने नर्मदा की परिक्रमा छोटे विमान से की थी, फिर राफ्ट से गुजरे थे। इस दौरान नर्मदा संरक्षण के लिए गांवों में चौपाल बैठकें की थीं। बांद्राभान में प्रति दो वर्ष में नर्मदा महोत्सव का आयोजन करते थे। मैं भी उसमें भाग लेता था। नर्मदा सेवा यात्रा का विचार जब मैंने उन्हें बताया था तो वे बहुत प्रसन्न हुए थे। वे 09 मई को यात्रा में आए। उन्होंने नदी जल और पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम में 8 मई को भोपाल में भाग लिया था। अस्वस्थ होने के बाद भी बहुत अल्प समय में, पर्यावरण एवं वन मंत्री के नाते उन्होंने बड़ी दक्षता एवं प्रशासनिक कुशलता का परिचय दिया था। भारतीय संस्कारों में पले-बढ़े अनिल जी अब हमारे बीच नहीं हैं, सहज भरोसा नहीं होता।

उनके निधन से हमने कुशल संगठक, नदी संरक्षक, पर्यावरणविद एवं एक नेतृत्व जो देश के लिए समर्पित था, उसे खोया है। उनका जाना प्रदेश व देश के लिए अपूरणीय क्षति है। मेरी तो व्यक्तिगत क्षति है। मैं सदमें में हूं। लेकिन नियति पर किसी का बस नहीं है। उनकी वसीयत मिली है जिसमें उन्होंने कहा है कि उनकी स्मृति में स्थल का नामकरण, पुरस्कार, प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन न करें। अगर कुछ करना है तो पेड़ लगाएं और उन्हें संरक्षित कर बड़ा करें एवं नदी तालाब का संरक्षण करें। एक महामानव ही इस तरह की वसीयत लिख सकता है।

मैं उनके चरणों में प्रणाम करता हूँ। भगवान ने श्री चरणों में उनको स्थान दिया है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति दे। मेरे जैसे हजारों कार्यकर्ता एवं परिजनों को यह गहन दुख सहन करने की क्षमता दे। हो सके तो अनिल जी फिर लौटें...